नाम- डॉ सुप्रभा गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा - I
पत्र - I
शीर्षक : कविपरिचय : जयशंकर प्रसाद
दिनांक - 24.04.2020
व्याख्यान सं - 2

कवि परिचय :- जयशंकर प्रसाद (1889-1937 ई०)

काशी के प्रतिष्ठित परिवार में जन्में प्रसाद छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। हिंदी काव्य में छायावाद के स्थापत्य का श्रेय इनकी प्रसिद्ध कविता 'झरना' से ही माना जाता है। काव्य में माधुर्य एवं जीवन के सूक्ष्म आयामों के चित्रण से ही इसे भव्यता प्रदान हुई, जो छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। प्रसाद जी मूलत: 'आनंद' के कवि हैं। अपने मन की वेदना को 'आँसू' के लोकमंगल की भावना से जोड़कर एक उदाहरण। समाज के समुख रखा है। उनके काव्यों में कभी एक टीस तो कभी जगत की नश्वरता के दर्शन मिलते हैं। 'कामायनी' एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। एक दार्शनिक कवि की भांति उन्होंने इतिहास एवं दर्शन के ज्ञान को, प्रबंध योजना से समन्वित कर 'कामायनी' में अभिव्यक्त किया है। यह मानव के अंतस एवं बाह्य विकास की गाथा है, जो अंतत: शैव आनंदवादी दर्शन से प्रभावित होकर समाधान ढूँढता है। इनकी अन्य प्रसिद्ध काव्य कृतियों में - काननकुसुम, महाराणा का महत्व, प्रेम पथिक, आँसू, झरना, लहर, कामायनी आदि है।

Scanned with CamScanner

हिंदी साहित्य के इतिहास में इनका कृतित्व अक्षुण्ण है। वे एक युगप्रवर्तक रचनाकार थे, जिन्होंने कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास के भी क्षेत्र में हिंदी को अनेक महत्त्वपूर्ण एवं कालजयी कृतियाँ दी हैं। विशेष रूप से भारत की ~~अ~~ प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की गौरवगाथा का गुणगान इनकी रचनाओं का प्रमुख विषय रहा है। विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतवर्ष की सांस्कृतिक विरासत का उद्घाटन ~~और इन्हें~~ प्रमुख है। काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार कामायनी है। खड़ीबोली का यह अद्वितीय काव्य मनु और श्रद्धा — मानवता के स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं।

Scanned with CamScanner